

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

४४२ पु० ११ (४७२)

ग्रंथ नाम

वाराह्यन, अश्वंग इ

विषय

बुधा पुराणे

जोयमा⁽¹⁾ श्री गं जेरायेनम।

। श्री रामव रदः श्री भंग। समुर्ते
येनमाः श्रीरार स्व तीयेनमाः श्री
गुरुस्थानमः रुसी पन्था। स्थान
नीस्थ तेः को जेयेके अ। वस्थरीः
मे छुनीमो वळेसी मुच्याहारीः
कुम्हाकी ड य मुना तीरीः मे केदु
। रीस्वेळ तगाताते ये कुम्हा उभाय
श्वातलीमो वळेसी का के कुम्हातात
श्री साउतीसी सुखा वनावनमा
की काय तेय वेनी वीमी काः ॥ ४ ॥ धन
धन्य या वृक्षाची स्थितीः उम्हा व
पा रा साहातीः स्थ येक स्तेन

(2)

जन भुवा वती: छ। या। द्या। की। फळ पु
स्थि: आ। पद:। करी को वही तरुची
डाहा ही द्य सुनि व दे वन मांही: दावे
ज वही पाहे दि शाळि: न वती न ता रु
म फळी: छ। परोप करी प्रा। की दु न व छ
र जी: वा। जन ये ३ नी यां फळ तो दु
नी यां: ने ती तरु वर फो दु नी यां ने ती
तरु वर फो दु नी यां: दे खो नी छा
चामीळ ती पी डा था: ने ७। ती वी
स म कर। य। गाथा आ पु व्हे मरी र
। सु ख अ छे रि शर्व ज ना ३ प्रकार
। तें पु र्ण पुरारी बिले चारी रि
व रा म अ ही का री: ॥ ३ ॥ ७ ॥
पे से वं छी ति व भा मी: हरी की

॥ दे गो वळ्या नी: गो। वळ इ वळ ती
॥ ना ना परी सी। कु ण। सु खा सी
॥ कु के ने: ॥ ॥ मग स व ग डे म्हा
॥ ७ ती ज ग जी व न। सु धा आ
॥ क र्णी त अ स प्रा ण। ई द्री ये रा
॥ की जा नी या ह्मी ण। प्रे प्रा च
॥ क ण्हा प्र सा व्हा। दे ई: ॥ पा:
॥ रे के। नी यो रे से व च न: हा
॥ सो नि ची ती ना रा थ ण। यां सी
॥ प्रे म सु र या चे दी व्या न्न: गा धा वे
॥ म्हा णु नी का थ म्हा णे गा धा ब्रा म्हा
॥ ७। वं द न वळी ये थे गा। स्व र्ग ई ७।
॥ चा च नी ता ती: या गा तें: ॥ ३ ॥ ३ ॥

(2A)

जवाभातेअनंतयातेमशावें॥३॥
देकोनीचालीलेगोवळें:दुरुन
वंदीनीवीप्रकुळे:थेरयजी॥४॥
कोळलेगळतीडोलेछुरने
चाजेदुनीधादे।हीहातगो
वळेआमळपांतवीनवीत:कु
म्हाजवलीआतायेथ:व्यापि
ताबहुतदुष्टेने:आअनमा
गोहाडीलेठुम्हा।प्रती:तेदीळे
पाहीजेअतिप्रीती:तेकुम्हाथा
हानलेरवीती:मंदमतीअहं
कंरे॥५॥पदा।कर्मजडाहरी
दर्शनदे।नकायतेकरनेविश्रा
नळवाळववाही:अप्रतिहीथा

॥सीनसेहरीचेसुखकाहंपुर्णव
॥यासीवर।मबहुदरीवाही:आ
॥सर्वरूपीसर्वजगीलेसमुल्ल
॥ह।ला।न।म।गी:आकुण्यासीहे
॥कर्मयोगी:न।म।ती।अंगीउ
॥वीद्यामदं॥६॥म।नवीभानुनीअ
॥रंगा:ऐक।दी।ज।नर।ले।रा।गा
॥मृणालीगोवळेअवीचारीयेगा
॥करलेयागाया।री।गा।था।पुठेंहोना
॥परतेदुरी:कैवाज।रचेर।आजी
॥लाहरी:आ।ले।त।मोटे।आद्य।कार
॥अंनेकुसरीमागावया:आने
॥दुचकारेअन्नातं:नीरसापर
॥तलेगोवळे:येउनीसांगतीहरी
॥ते:येरुचीतेंहासमा:॥७॥कुर

॥ म्हणे भवग डीयां सीः तुम्ही चुक
 ॥ ते ती यु ही सीः आतां जा पाकशा-
 ॥ वे सीः रु सी पन्था सी प्रार्थी वेः
 ॥ व्याहाम्प्या न्प ही धनी संपन्न
 ॥ त यां सी कर्म ठा चं आवरु नः
 ॥ जे वी वी वरी नी धी आवरु नः
 ॥ मुजं गी ज। ग के त कीः गवा। तुम्ही
 ॥ हु दई धरु नी मातें माझ्या नांवें मा-
 ॥ गा वें धन। तेंः सु रे वं उ चं बळें
 ॥ नी हां ची ची तें दे ती अं न्ना तें तु-
 ॥ म्हणि गणा दे को नी कु स्या ची म-
 ॥ तः स व ग डे चा नी ते हरि रे जातः
 ॥ हां चा ठ। कु नी कर्म पंथः वृ स मा-
 ॥ र्गे प्रे व स ते गणा दे। स व मा-

॥ की म्हे हं धे कांतः ते धं स्वयं स्वै पां क-
 ॥ हे। तः रु सी पन्था स र्ग विशे व तः
 ॥ गो व वें ते थ उ भे ठ। क वें गणा दे। ज-
 ॥ ता च के ल साष्टांग न मनः उ भे-
 ॥ रा। ही ते क र जो दु नः पै न ज व-
 ॥ ही च आ। ग आ हे कु स्याः तु म्हा-
 ॥ सी अ न्न मा। गी ते गणा दे जे व ही-
 ॥ कु स्या दे क ता का नीः ई प्री था ची-
 ॥ रा। ही नी कर की म्हणे ती बो ला-
 ॥ वें मा गु ते नीः का य सु ध भ व नी-
 ॥ पा ज्जी नीः गणा प दः। प्रा ग सर व-
 ॥ ज ग दी स तो ह री आ। ला आ हे-
 ॥ गं गा ज या चे प ई चे री व म स-
 ॥ की वा हेः गु ज ज या चे व र्णी त-

(5)

॥ पद वेद नद्यायेः पाद सु रोजन-
॥ श्याव छी शसिलोपोनी जायेते प-
॥ द ह सी चे चीं तीति । ज न हानि-
॥ व ता हे गा तो धी व च रा भां चा धु-
॥ छी परी पु र्ण ची ला हे । रा ॥ ह न-
॥ क ट नी वा स य दु ना य काः दै क-
॥ तां ह्या ये क मे का जे मु ती दै क त-
॥ ह्ये । ह्य । स क छी का ह द र्द र्द र्द र-
॥ सां ट वी ती गा थ्याः गो व न्वा स म-
॥ वे त च क पा छी । कृ क ला न का आ-
॥ रे व नी क छी प क छी दै को नी का-
॥ नी उ न्ने ष ते ची कृ छी सि ह्य क-
॥ री तीः । आ आ ती वी का वे तु ची-
॥ ते च तु वी ह्य । रे व न पे ह्य चो ष-

॥ रु पा द्योः कौ ध र न भा ध र सा र-
॥ ड वी ध्येः क द न । जे री ह्य करी-
॥ तीः । गो व न वे रों पर तु न्नी-
॥ अ प नी ह द र्द पा त्रे न रु नीः रु-
॥ सी प न्हा । चा नी ल्या ह्ये ची कृ छी-
॥ कृ स्था न य नी प ह्यी व य । ग थ्याः-
॥ मे । ह म भू ते चे मा ता पी ताः रा-
॥ ग द्वे स दी र वा वे वा री ताः क-
॥ ते क नो भू प ती नी गे छी ताः स-
॥ ड नी व नी त । चा नी ल्याः ग थ्याः-
॥ क स्र व णं । ची या प री थे सीः ग-
॥ स च । नी ल्या कृ स्था पा सीः आ-
॥ छी की र्ति ना चे य । द रे ष सीः

(5A)

॥ पण की जोः ॥ आ दे जी या मंत्र दीत
॥ प २ स्फुरीः ॥ उ नै धे उ नी चानी मया
॥ नारी धा जी चा के हा प हो हरी
॥ हे चिं अंतरी उ क ठाः ॥ उता उत रमी
॥ मां भा च्या अतीः स्व रूप ला उ
॥ नी या सु स्वा वतीः तै सती हुती ला
॥ क्षीणा श्रीपती नी वलया ची ती
॥ स्वाने देः ॥ उता गा वु नी या मोक्ष
॥ सु ख ते धी चा वो ती ला जे ह
॥ रि स्वः ते ची कु र्छा चें श्री म
॥ स्वः प व हा ती सु श्वन सं। र वे
॥ उपा प दः ॥ पा हा गो पा हा गो हरी पा
॥ हेः ठा ई न ई रो धा वा ट। वा ह गो
॥ १८ ॥

॥ द द थ क म ल य ॥ ज रीः अ बा
 ॥ ह द ट म ह रीः बु ध पै ली क -
 ॥ डे उ म पा ह गेः ॥ १ ॥ की ती आ
 ॥ तां चा व टीः प्र सी ची हे क स व
 ॥ टीः उ म भी पो हो नी उ म यार ह
 ॥ गेः ॥ १ ॥ पु र्ण भी वर ॥ म द प्पी न्या
 ॥ ह ॥ कु नी सर्व प्प सी नि ये ॥
 ॥ ने दा पा सी दा ह गेः ॥ ३ ॥ मे घ र ॥
 ॥ म म नो ॥ हर का से का सी ल ॥ पी त
 ॥ ब रः कु ड ले ते म कर कार गे ज
 ॥ अ ना वर म जी मु गु टी ॥ ३ ॥ ॥ अ र्च
 ॥ म जी का र्ठी क री ची म जी द्यो ग
 ॥ डी श्वा द्या व रीः ची जी मु र मी
 ॥ वा हे अ ध रीः ची म जी हा री दे
 ॥ श्वा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ जे अतरी चेतन्य पणें ते चीनाई
 ॥ रवो तिले कुं स्या पणें आतां जे सु
 ॥ स्व जलें त्याचे नीदर्येनः ह्या ते जा
 ॥ जे मीथे कुं गात्रा की बहु ना बहु
 ॥ त दीवसः श्रवण मनने नी उद्या
 ॥ सी आणी ला होतनी जमानसी तो
 ॥ ची प्रथमै सी देरवी ना गात्रा के ची
 ॥ न मागी कुं स्या जीर्णः हृदयांत
 ॥ नेले सावकाशी जीवी आलं
 ॥ मुनी रुसी के सीने जपाती सी
 ॥ मेळुनीः ॥ ६४ ॥ दृष्टादरी न
 ॥ वीरा ले दे स्वत कुं स्या रघुर ना बोला
 ॥ सुटलमोन्या ॥ अनंद धन के दे
 ॥ लाः ॥ आटा कुं नी देह गो ॥ ६५ ॥ आशा पा
 ॥ ६६ ॥ वथा जगनी वासाः प्रमे आनी

॥ या वी जथोर ॥ ६७ ॥ रुसी के सा
 ॥ कळे ॥ ६८ ॥ स्या ॥ ६९ ॥ आल्य वी
 ॥ प्रांगना प्रीळे नीः दे कय जाले
 ॥ कुं स्या दर्शनीः वे ॥ ७० ॥ त रुनी
 ॥ हरी चरणीः भस्त्रा की पुर्ण
 ॥ पुजीले ॥ ७१ ॥ अं ने अपीली च
 ॥ तुर्वी धोः गोळियां त्या ना पर
 ॥ मानंदः सुर्वी मुखी रावी गोधी
 ॥ दः चतुर्विध स्वादये कची गळ
 ॥ काय अन्ने विषा दुकळ ना सीः
 ॥ की रुसी पन्या ॥ ७२ ॥ मा गो बगे
 ॥ लाः की प्रे माच्या प्रेमा सी कु
 ॥ के ना प्रे प्रसुरवा काशे वीतः
 ॥ ७३ ॥ आया गो वळ ॥ मुखी वा दोदा

ठीक वळ धाती जग जे ठीक ते
 म्हा उती आजी नर नी शु धी
 म र मी ठी वार गोळ गद्या कु र
 प्र सा द कर्म ठा मी दु र्ग म बु मि
 व जे दे वा सी रु सी प न्या ला
 वृ ल्य शे स रे वी ती मा न स चा
 रु नीः ॥ १ ॥ कु र ॥ म्हा ठे दी ज
 प न्य ॥ सि वि रे जा ने ये थ आ ला
 तीः आ ता ज रा व स्थ व सी नी
 ज पा तीः य ज र मा सी क सी ती
 लः ॥ १ ॥ प द ग ज वे दे से का नी दे को
 नी यां कु र ॥ वा णी बे ल ती या
 का मी ठी वी ये ग व र वे गा वा थ
 दु रा था का नी वी सी पा था गा तु
 अ ज ची का नी प ती पी ता उ दे
 रु नी पा यो दे ता कु नी के से नी

जा वेः गा था य व डी ला थ उ ल धु
 नी आ लो वा च ॥ १ ॥ नी ना या ची
 म ती जा नी ता उा चो र नी यां
 म न लो टी तो सी म्हा उ नः आ
 मु चे च र ज न च ल ती आ ता ॥ १ ॥
 पु र्ण मी व र म य र स लो जा
 तां आ म्हा न ता व ती आ ध म
 म्हा ठे नी का रे ग पा ध ना पे को
 नी या चे रे व द व च न के उ न को
 म्हा ठे कु र ॥ मी र व भा क्षी आ
 प ण च ल ते जा ण म नो व ती
 ॥ १ ॥ ता तु म्हा आ ल्या ती म स पा
 र मी न क ल्या ती मा न्य स म
 र सी अ न ने अ पु नी य र पु
 रु सी सा च्या य ज्ञा सी मी न
 प येः ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ जे मी येथे येत आहे ते ग्रही मी
 ॥ जम समीताः कीरुनी साची
 ॥ घाडा हाताः तुमची अनकु
 ॥ कृता करवीन गापना भासेद री
 ॥ नवदेव्यासीः ब्रह्मादीक वंदी
 ॥ तीसासीः तुमची गोष्टीका
 ॥ यसीः सधमानसी नधर वेष्ट
 ॥ अपथा मजमीन लेजे अत्मनी
 ॥ वेवनीः वीज अनुता पलेष्ट
 ॥ चवक नरि तुम्ही जातं येत नु
 ॥ वनीः तुम्हासी बहु मानीस्त
 ॥ वीतीलाः पडा पदः आचाल वेचा
 ॥ लावे आतांचाला वेः येत समा
 ॥ सीरी वेगी पावि वेः गापा पुष्प
 ॥ तुतीची थाहा माली वेगी

॥ तुम्ही जासा येत फळसी वरा
 ॥ मा अ पी वेष्टा या पसे नीर्य थकु
 ॥ स्थाव चनः दे कोनी रुसी पन्यार
 ॥ आपण कुस्थाव चना चे कुक्षेष्ट
 ॥ ना सर्वथा जापान करवेः फललो
 ॥ कशाणा तरी ले रा नाहीः पण कु
 ॥ स्था अज्ञानुल दवे कहीः परीच
 ॥ त पाई कुस्था चे पाया येत सावे
 ॥ येतां सतीः धरी चहा यापे स्या
 ॥ गमती आच्यार हे पुर्ण हुती
 ॥ येत समासी पैनेले आ पदा
 ॥ वी प्रपली जे पहिली आ कुस्थ
 ॥ आसा नी वेष्टने मी नली ते
 ॥ त वहेती तन्म य जालीः ते दे

। स्वीक्री द्वी जं वं दीः । एता म म वी
 प्राद्यनुता पजाताः । ह्री गार्ही ग
 म्हा गती अ । एता । कु स्था पर
 ब्र म्ही प्रेम याताः । अ । म्ही मनु स्थ
 । चानामानी तेः । एता । कु स्था प्रा गा
 । प ठ वी ले अं । नः । अ म्ही ने दी ता
 । दु वी ले कु स्था । ज न द द्य । गे ले
 । अ । म चे य जः । कु स्था च र्ण न
 । ब्र जतः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । ती जनः । ना ह्री गार्ही जी उ च्च र
 । व त वं द्य न द्य ट प ट न स तां
 । ज न्म म र पाः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । अनु र्म र न्य । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व

। आत्म नी वे द नीः । त च म नि नी
 । पु र्ण कु स्था । च र्ण न
 । वे ग वे पं जी । न्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । की जेः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । घ ताः । स म रु पजाता चै सर्वथा
 । प द ह्यु थं । नि नी स म ताः । तु री
 । य ता प ह्री नी चीः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । जी त ब्र क था । स नी वे नी तेः । क द
 । ची त ह्री द्ये वी ह र तां । दृ ष्य अ
 । भा व कु स्था म य ताः । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । स कं वं चीः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व
 । नी वे द नी ते म्हा जेः । व्य व हार
 । ने जे ची कु स्था प ठेः । वी सी ए
 । प ज न्म म र पाः । एता । ह्य न्य द्य न्य ह्यु व

॥ नुमी के चे वी सी ए व णः हे वा
 ॥ सी षी चे नी रो प ण प्रो ते हं
 ॥ वे सा व धानः जी नी ची खु
 ॥ ण स ण नी णः ए वा की बहु ना
 ॥ या नी यान कृ ती वि प्र स्री यि
 ॥ स सं गतीः सु संगे अ नु सरो
 ॥ नी दी सम र्तिः कुर ण प्राप्ती पा
 ॥ तेः ॥ दृष्टा ग्रे ता हा वे सा व धानः
 ॥ ज्ञा ते र र्सी प न्य चे आ र व्थान
 ॥ आ ता गो व र्ध ना चे उ धर णः
 ॥ क र्त्तु कु र्ण के तु केः ॥ दृष्टा
 ॥ लक्ष्मी ना र यै जा रा र णः पु र्ण
 ॥ न द प री पु णः दृ ष्णी सी व
 ॥ रा भ्ये से अ व्तीः दृ नः नी

॥ य प ण चा व कीः ॥ दृ ष्ती
 ॥ श्री र र्सी प न्य आ र व्थान
 ॥ संपु र्ण म स्तु श्री कु र्ण वि
 ॥ ण म स्तुः ॥ दृष्टा छ छ छ





(13)



(13A)

ॐ नमो

॥ श्री चक्र नाथाय नमः ॥

॥ आनंदलहरी प्रारंभ ॥

॥ ॐ नमो । सच्चिदानंदघनाः वो
 ॥ नमोप सपरनीर्गुणः ॥ ॐ नमो
 ॥ सकलसुखाचीयानिद्यानाः
 ॥ जगज्जीवनामुल्लूखी जगुः ॥ ॥
 ॥ ॐ नमो सकलव्यापकाः ॥ ॐ
 ॥ नमो अनांदाचीयानी जगुः
 ॥ ॥ स्वा । आनंद आनंद तु मे नि
 ॥ ॥ देशाः तो तुलैका प्रत्यक्ष
 ॥ ॥ ॐ नमो अ व्यक्त परब्रह्म ॥

(13A)

॥ अ न मो सर्व भुक्ता चीथानी
 ॥ जगामाः अ न मो नक्ता चीथानी
 ॥ कल्प दृमाः तु जगत् पमा धनुः
 ॥ नाहीः ॥ ३ ॥ अ न मो आदी पुर
 ॥ सा आदी देवताः अ न मो उर
 ॥ ती प्रच्छेद विरहीताः पाहतां तु
 ॥ सकळा चा जनि ताः सर्व
 ॥ कृति संता तुम्ही चीः ॥ ४ ॥ अ न
 ॥ मो ज्ञान साग साः अ न मो नीमु
 ॥ ती अवताराः अ न मो भेदाची
 ॥ चानी जग रा वीर्यं भरा तु ज
 ॥ न मोः ॥ पा तुल्यं नी ज रूप पाह
 ॥ तां दृष्टीः नी ज नंदन स मा

॥ येष्टीः ॥ दृष्ट्या जन्म मर
 ॥ णाच्या गाकाः नीर्य पेटी मी
 ॥ जालेः ॥ गाढा बहु मुली ची आय
 ॥ टीः संचरती हे। ती माया पोद
 ॥ हो। ती तु झी कु पा दृष्टी तु ठा
 ॥ उठी पळा ती गागा तुल्यं रूप प
 ॥ हा तां कांही गाबंध मु रा दो न्ह
 ॥ नाहीः व्यापक तु सकळ देह
 ॥ अनंद डेही जेवी तर गाटा
 ॥ बंध मुली ची काहा जी दे की
 ॥ ती जेवी स्वप्नीः जागृ ती मा
 ॥ जी ये उनीः साच न मनिका न
 ॥ ती ते गाटा स्वर्ग नर्क दो न्ह श
 ॥ दाहा अ न मो नाचा अनु वाद

॥ स ह्यु रकु पेचा ज। नीथा बोधः
 ॥ जाले सर्व येत न्यगान्ना सगु
 ॥ ज वा। जी नी गु जीः हे सदा च
 ॥ चे नाध वपणः जे थें सदा जना
 ॥ सुन्यः गु णगुण उर ना को ठे न
 ॥ तु सी य धा जे मा या सगीः ते
 ॥ अनंत ब्रह्मंडे जालीर चीती
 ॥ करी पंचक्यु वित्ता ची व्यक्तीः
 ॥ या जै सी संत ती वा जे ची क
 ॥ जै सा कल्पने चा वी सा ख
 ॥ रः हृदई करी तु अपारः फल
 ॥ पाहा तां बदी रे साधारः ते
 ॥ साधी चा समाये चा शा आया
 ॥ ही जी सी तु साख रुपी आ

॥ सती तयं सी कं वपी माये
 ॥ ची स्थीतः स कळ मणि
 ॥ लें दे रव तीः अज्ञाना ची
 ॥ ब्रह्मा ती धार ना हिः ॥ १५ ॥ मु
 ॥ की चा वळ साः जे थ अज्ञा
 ॥ चि द साः ते थें बहु निद्रित
 ॥ वो सणे जे धसाः ब्रह्मा ती चा
 ॥ फा सा पड ना अ रे गाण ॥ -
 ॥ ज्या ते दुष्पी कु पा जालीः ह्य
 ॥ ची कृ। ती नी र स नीः कल्प
 ॥ ना वी करो न गेलीः वृ ती बु
 ॥ डा नी तु ज्ञा रुपी गाण दा पु
 ॥ रे स मा ग नी था ला हा तां
 ॥ दु री के ले काळ मे तेः अ
 ॥ ए स आ जी ले नी च तांः -

॥ प रि अ ळं का रा ते न मु के
 ॥ पु र्व क र्म जे ध ड ले ते
 ॥ ते न मा पा व ले ले ह प णा
 ॥ ते भु क ले न मो डी ता जाले
 ॥ सु व र्ण श क्ता ते से ते कृ पा वं
 ॥ ते नी र सी ले खा ती को जी मे
 ॥ ते नी र सु नी ज्ञा न अ ज्ञा ना
 ॥ ते नी ज स र वा ते मे ळ वी ले
 ॥ परी दे ह ची चा मा यां उ
 ॥ हे क र्म रे रे वी स ता ते न
 ॥ चु के रू रु ना था र व दुर व
 ॥ सं ची त को ग वी श च्छा पु र्वी क
 ॥ र्म जे ध ड ले ले या अ लं क रा
 ॥ ते आ सी ते

॥ ते नाम रू पा सी मु क ले के
 ॥ व क मा ले सु व र्ण ले या द्यो ले
 ॥ नी या अ रे चा स ह ड
 ॥ वी ना ना वी दे सा हि पु री कर
 ॥ नी दे ह स ह स चि त ते सं वो
 ॥ ग वी श च्छा दृ ष्यं त जै सा दृ ष्य
 ॥ छे दि ती या स मु क बा र द्र
 ॥ ता न ह डे ची ता काला आं गी
 ॥ अ सो नी अ ल्प का म ग के
 ॥ व क का ष्ठ ले ये ना थ आ प रे अ
 ॥ णी क के फु ले स ह ति वा ल ता
 ॥ स मु के दृ ष्य रं वु ट स क ल
 ॥ अ ज्ञा न के व ल का द ह ये ना थ

॥ ते सीस हुरुची कु पाहोचेः
 ॥ तो डीवीवकाची घेद्यायेदेह
 ॥ दक्षपडीलापडेः आरद्रताराहे
 ॥ संचीताचीगाथ्याः जे भाअनुष्ट
 ॥ भवतो वाळतुः संचीत जीयामा
 ॥ आसीतुः दक्षाची रंगुट लीमा
 ॥ तः पावल्या देहांतः सु न्य होयो
 ॥ द्याभस्मजालीयंनं तरेः दक्षा
 ॥ सीठावनुरेः तैसे देह अनुभव
 ॥ वीचरेः पुढेवे। सरेजन्मप्ररणः
 ॥ ॥ तैसेदेहपावलीयालयः पुर्वक
 ॥ मसह जाची जायेः संचीतासही
 ॥ तनुरेठायः सह जे होथे सुख
 ॥ रुपः ॥ द्यापुर्वकमाचीपेसी

॥ परीः गुरुवाहीनेवे आपणा
 ॥ वरिः राहानी अनंदाभीरिः
 ॥ साक्षसेवे हारीवर्ततीः ॥
 ॥ जैसंजळ। माजीपम्दपत्रः ज
 ॥ लीअ सोनीया अलिपुः तैसा मुक्त
 ॥ वेहे। रीवर्ततः सुरेयके। गीतवा
 ॥ नंदेगा। उगाभव न्र मातं नीरसीनें
 ॥ जन्ममरणाते चुकविलेः देहीच
 ॥ अ सतामु ककेलेः स्वरूपीमेळ
 ॥ वीले आपुलीया गाआतुसीया
 ॥ स्वरुपाचा अनुभवः जाणती
 ॥ संतस ज्ञानप्रभवः वीसरोनी
 ॥ देहिचादेहभावसुरवा अनुभव
 ॥ कोगीतीगायाः जे अमृता

॥ चेसा गरीः अहि पी सी जि डक
 ॥ रि तो ज न्य मर जां चें म य न ध
 ॥ सीः हे कै सा परी घ डारु कैः ॥ उगा
 ॥ जे थे ज न्य मर जां ज ली वा वा ते
 ॥ थे बंध मु क ना कै चा ठ वे ॥ जी
 ॥ व गी लो नी डा पु क्त उ ग उः वी स
 ॥ र गा पा हा हे ॥ दु जे प जें ॥ उगा
 ॥ ऐ सी उ सें कु पे ची कर जीः स व क म
 ॥ नी र सी त त क्षणीः नि द्वि स वो स जा
 ॥ वे स न्पीः तथा उ ठ नी सा व ध के ले
 ॥ उपा पु र रो त मन म य द्वा क्ष र ज्यो
 ॥ बा वे क जे नी रं तर ते थे कै चा न
 ॥ व क्त म सं चार न क के ब्या पार
 ॥ पंच कु ता चा ॥ उद्या म नु र च र जी

॥ ज या चा कां व त या ब ध मु क्त ज
 ॥ का वा वोः या ते का क वि सर ना पा ह
 ॥ हे ॥ तथा ठा व ब्र म्हा प दी ॥ उगा जे प
 ॥ तं ग न क्षी व ड वा न ला सीः की दु दु
 ॥ र गी ली जे रो रा सीः जे स्व द्यो त गी
 ॥ ई की जी वा सीः ते गुरु क तां री ब ध
 ॥ ताः ॥ उचा भा व थी जे नि ग डेः तथा ब
 ॥ द्य ता कै सी घ डेः ये म पु री वो स प
 ॥ डेः म्हा गु नी र डे पे त ना थः ॥ उगा जे
 ॥ वा य से यु ध की जे स्व ग प ती सीः जे
 ॥ पी प ली का म ह सा ग र से सीः जे
 ॥ सु र्ग र गी ली जे ब्र म्हा ड सी ते
 ॥ गु र्ग र गी ली ब ध ता गा ना जे वि
 ॥ ची ची ची या हु ता स ने गा द ग ध हो

॥ ती माहा वनेः उँर जु सर्किची -
 ॥ चापानेः मृ यु पा वणेकं दंताः ॥
 ॥ कीमुक्षीकै च थडकेः माहापेरु
 ॥ पडारकेः वीयां प्रेता चीयाथाकेः
 ॥ मृ डपों मके माहा काकुः ॥ की
 ॥ वावा जे ची या रु तेः रणी जीकी
 ॥ जे ईद्रातेंः की पां का स वा चं ध
 ॥ तेः कुं भक कर्तितें तर ठ हो येः ॥
 ॥ हे ही ईस्व र ई छे ने छ डोशकेः
 ॥ परीगुरु मत्तारी बधुता न धडेः
 ॥ ज न्म मरणा चे फीटे लें कोडेः तु
 ॥ टलेंबी रहें मा ये चेः ॥ मा जे माय
 ॥ नी सु प नि व्याखीय कळ कळ
 ॥ तां ते व्याख नी ठलीः नी मी प्य ॥

॥ मा वे ब्र म्हां वर चीलीः च प्ही
 ॥ के ली स्त्र ईछाः ॥ तथा चाने
 ॥ ण ती पारः ब्रह्मादि हरि हर राः ॥
 ॥ ती स्थिति सं हारः ह ही व्याप
 ॥ र मा ये चाः ॥ ॥ जी मु ति ची जे
 ॥ स ताः हे मु छ म । ये ची प्र ता प ल
 ॥ र । नी वी ण का र्थे कर्त हे ही स
 ॥ र्थ था क दा पी न ब डेः ॥ अ गा
 ॥ द्य मा ये ये कर णेः र चु नी न ना
 ॥ वि दा णेः कर नी अ व दो वि भ ज्ज ने
 ॥ द्य द्द प्य पणे वर्त ताः ॥ जे स्व
 ॥ रु पी ई छ जालीः ते मा य । न । व पा
 ॥ नीः स कळ कळ ता ते प्र भ व नीः
 ॥ च प्ही नी मि ती पळ भा वेंः ॥
 ॥ ॥ री वा सी उा पु नी जी व प



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com